दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): विक्रम अंगार

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16|10|17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 4 2 3 8 3 2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

*इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।*

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 121½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास संतोषजनक है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

यद्यपि खड़ी बोली का तीव्र विकास 19वीं शताब्दी की घटना है परन्तु इससे पूर्व भी यह विभिन्न रूपों में दिखायी देती है ऐसा ही एक रूप नाथ साहित्य में देखा जा सकता है।

नाथ साहित्य, नाथ संप्रदाय के लोगों ने अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार हेतु रचा था लेकिन यह बात हमें आश्चर्य में डाल देती है कि ये नाथ कवि 9वीं, 10वीं शताब्दी में ऐसी भाषा का प्रयोग कर रहे थे जो आज की खड़ी बोली के काफी नजदीक थी उदाहरण –

"नौ लखि पातरि पीछे नाचै पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै तब अंतरि बसै भंडारा।"

इसमें पदों में आकारांतता तथा संज्ञात्मक विशेषण इसे हिंदी खड़ी बोली के नजदीक खड़ा करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वास्तव में नाथ, अमीर खुसरो, सिद्धों ने खड़ी बोली के प्रारंभ में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें नाथों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

Gd 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषा की तीसरी अवस्था का द्योतक है जिसका समय लगभग 500-900 ई० तक का है। यह संस्कृत की संयोगावस्था से लेकर हिंदी की वियोगावस्था तक सरलीकरण में एक मध्यवर्ती पड़ाव है।

अपभ्रंश की कारक व्यवस्था संस्कृत का ही अनुसरण करती है। संस्कृत की कारकीय व्यवस्था में विभक्तियों का प्रयोग होता था परन्तु अपभ्रंश में यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे कम होने लगी तथा निर्विभक्तिक प्रयोग के आरंभिक उदाहरण यहाँ देखने को मिलते हैं।

इसके साथ ही 'हि' विभक्ति से अधिकांश कारकों का कार्य चला लिया जाता था। इसके अतिरिक्त परसर्गों का विकास भी दिखने लगता है उदाहरण के लिए - संबंधकारक में 'का' परसर्ग का विकास अपभ्रंश की अपनी विशेषता है जो आज तक हमें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिखायी पड़ती है।

अतः कहा जा सकता है कि अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था संस्कृत से सरलीकरण का परिणाम है तथा आधुनिक हिंदी की कारकीय व्यवस्था का प्रस्थान बिंदु थी।

6.5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

हिंदी को राजभाषा के तौर पर किस प्रकार लोकप्रिय बनाया जाये इस हेतु कई संस्थाएं विभिन्न मंत्रालयों के अंतर्गत कार्य कर रही हैं। उन्हीं में से एक संस्था है केंद्रीय हिंदी निदेशालय। जिसका उद्देश्य हिंदी के विकास हेतु उपाय सुझाना है तथा विभिन्न मंत्रालयों के बीच हिंदी भाषा के विकास हेतु समन्वय भी स्थापित करना है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय यद्यपि हिंदी भाषा के विकास में काफी सराहनीय प्रयास कर रहा है परन्तु इसकी सीमाएं भी हैं जैसे- काफी लंबे समय तक इसकी बैठकें ही आयोजित नहीं होती हैं, प्रशिक्षण एवं विकास हेतु इसके अधिकार काफी सीमित हैं तथा यह बाध्यकारी भी नहीं है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस संस्था को शक्तियां प्रदान की जायें। साथ ही इसकी बैठकें नियमित समय पर हों जिससे हिंदी के विकास में यह योगदान दे सके।

बेहतर करें

3/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

हिंदी व्याकरण के प्रारंभिक लेखन में कई विद्वानों ने सराहनीय प्रयास किये है उन्हीं में से एक विद्वान केलॉग भी हैं। इन्होंने हिंदी व्याकरण विकास के द्वितीय चरण में योगदान दिया तथा इनकी पुस्तक 'प्रारंभिक व्याकरण' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इनकी व्याकरण की पुस्तक को ही कामता प्रसाद गुरु ने अपने व्याकरण लेखन के दौरान आधार बनाया विशेषकर हिन्दी शब्दों के संदर्भ में। केलॉग ने हिंदी व्याकरण में संस्कृत तथा अरबी-फारसी शब्दों दोनों को ही महत्व दिया तथा एक निश्चित रूप प्रदान करने में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

वास्तव में जिस दौर में केलॉग ने हिंदी व्याकरण का लेखन किया उस दौर में प्राय,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरण लेखन का कार्य नहीं हो रहा था इसलिए हिंदी व्याकरण के आधार को निर्धारित करने में इनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा।

और उदाहरण लाएं

4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

संविधान के राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुसार 26 जनवरी 1965 को हिंदी को एकमात्र राजभाषा हो जाना था परन्तु इससे पूर्व ही अहिंदी प्रदेशों में हिंदी विरोधी आंदोलन प्रारंभ हो गये विरोध की अनुगूंज मुख्यतया तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल से हुई इसी परिपेक्ष्य में राजभाषा अधिनियम 1963 लाया गया तथा बाद में 1967 में इसमें संशोधन भी किया गया। इस एक्ट के अनुसार -

- 26 जनवरी 1965 के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी भी राजभाषा बनी रहेगी।
- केंद्र सरकार द्वारा प्रेषित किये जाने वाले प्रारूप हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होंगे।
- जब तक अहिंदी भाषी लोग स्वयं अंग्रेजी को हटाने का संकल्प नहीं ले लेते तब तक अंग्रेजी हिंदी के साथ कार्य करती रहेगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार राजभाषा अधिनियम 1963 ही वह पड़ाव था जिसने एक तरफ अहिंदी भाषी लोगों की भावनाओं को शांत तो जरूर कर दिया परन्तु हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाए जाने का प्रश्न लटक गया।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

~~मध्यकाल से पूर्व अवधी स्थिति~~

अवधी, पूर्वी हिंदी उपभाषा की एक प्रमुख बोली है जो अयोध्या, फैजाबाद, बाराबंकी, सुल्तानपुर, रायबरेली जैसे क्षेत्रों में बोली जाती रही है।

अवधी का आरंभिक रूप तो उक्ति-व्यक्ति प्रकरण में मिल जाता है परन्तु इसका पूर्ण विकास मध्यकाल में हुआ जिसमें सूफी काव्यधारा तथा रामभक्ति काव्यधारा का महत्वपूर्ण योगदान था।

वास्तव में अवधी का मध्यकाल में विकास कुछ संयोगों का परिणाम था जैसे इस दौरान सूफी संतों ने अपने रहस्यवादी सिद्धांतों के प्रतिपादन हेतु जिन कथाओं को आधार बनाया वह वास्तव में वे लोक कथाएं थीं जो हिंदुओं के घर की थी अतः इन्होंने अपनी रचनाओं में ठेठ अवधी में विवेचन किया।

सूफी काव्य में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी रचना पद्मावत में ठेठ अवधी का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया है जिसकी प्रशंसा आचार्य शुक्ल ने भी की है। इन्होंने अवधी में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जो अवध क्षेत्र की संस्कृति को व्यक्त करते हैं जैसे 'रनगंरा' महावर आदि।

जायसी की विशेषता अवधी में गोड़, आपन, हमार जैसे पूर्वी प्रयोग, महंगी के अर्थ में प्याली जैसे पंजाबी प्रयोग आदि में झलकती है इसका एक उदाहरण -

"जेठ जरै जग बहै लुआरा, उठै बवंडर धिकै पहारा।
जरिहुं पवन झकोरे आगि, लंका दाहि पलंगा लागि॥"

इसके बाद तुलसीदास ने अवधी के मिजाज को संवारा - सजाया। इनकी अवधी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु इन्होंने इन शब्दों का अवधीकरण कर दिया जैसे - हंसगामिनी > हंसगवनि, अमृत > अमिय, वन > बन आदि।

इनकी प्रमुख विशेषता ध्वनि शैली की है जिससे अर्थ अपने आप ही व्यक्त होने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लगते हैं उदाहरण -

'कहि - कहि कोटिक कपट कहानी'

इसके अतिरिक्त अनुप्रास अलंकार का सधा हुआ प्रयोग इनकी अन्यतम विशेषता है। अवधी में 'उ' ध्वनि का ज्यादा ग्राह्य इसे जनसामान्य की लोक भाषा से जोड़ता है -

"लोनुउ जल रहे लोनुउ कोना
जैसे परम कृपन कर सोना।"

इस अवधी में ही विश्व का सर्वश्रेष्ठ सफलतम महाकाव्यों में से एक 'रामचरितमानस' की रचना हुई।

इस प्रकार मध्यकाल में अवधी का काव्यभाषा के तौर पर काफी विकास हुआ परन्तु आगे चलकर इसका सीमित प्रयोग होने लगा क्योंकि ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली का प्रयोग बढ़ने लगा था।

औसत है

20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवहट्ट' को एक स्वतत्र भाषा मानने के औचित्य पर विचार करते हुए अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

अवहट्ट मध्यकालीन आर्यभाषा की चौथी अवस्था का द्योतक है परन्तु इसके संदर्भ में एक विवाद यह है कि इसे स्वतंत्र भाषा माना जाये या नहीं।

प्रारंभ में अवहट्ट के बारे में सामान्य राय थी कि यह स्वतंत्र भाषा नहीं है जिसके कारण गिनाये गये थे कि इसमें न तो पर्याप्त मात्रा में साहित्य रचना हुई और न ही इसका कोई निश्चित स्वरूप ही विकसित हुआ था परन्तु अब इसे स्वतंत्र भाषा माना जाता है।

विद्यापति की रचना कीर्तिलता में एक प्रसंग में इसे स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिया गया साथ ही संस्कृत से श्रेष्ठ एवं जनमानस में लोकप्रिय भी बताया गया उदाहरण के लिए—

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"सम्रूप गावी गुड़जन आवै
पाउम रस को मम न पावै
देसिल बानी सब जन मिट्ठा
तत तै सन जपौ अवहट्ठा।"

इसलिए अब इसे स्वतंत्र भाषा माना जाता है। इसकी शब्दकोषीय विशेषताओं में -

- तद्भव शब्द - यह सर्वाधिक संख्या में है क्योंकि संस्कृत से सरलीकरण द्वारा निर्मित ही आया है जैसे - ओंठ, गुड़जन आदि।

- देशज शब्द - इसका विकास ~~विकेन्द्रीकरण~~ देशीय रूप में होने लगा था जिससे स्थानीय संस्कृति को व्यक्त करने वाले शब्द पर्याप्त मात्रा में हैं - किस - किस, छुप - छुप आदि।

- विदेशज शब्द - यह मुख्यतः अरबी - फारसी के शब्द हैं क्योंकि विकेन्द्रीकरण की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रगति के कारण इनका सम्मिलन हुआ जैसे- मस्जिद, समास आदि।

तत्सम शब्द - जब तद्भवीकरण के कारण शब्दों में अन्तर करना मुश्किल हो गया तब तत्सम शब्दों का पुनः विकास हुआ साथ ही ब्राह्मण धर्म का उदय भी कारण रहा - अतिवृष्टि, मानवता आदि।

इस प्रकार अवहट्ट एक स्वतंत्र भाषा का रूप धारण करती है जो इसकी शब्द-क्षेत्रीय विशेषताओं से स्वतः स्पष्ट है।

6½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद' ने हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्होंने राजा लक्ष्मण सिंह के विपरीत संस्कृतनिष्ठ शैली के स्थान पर 'फारसीनिष्ठ शैली' को महत्वपूर्ण माना।

हिंदी भाषा में योगदान -

शिवप्रसाद सितारे-हिंद ने हिंदी भाषा के विकास हेतु एक व्याकरण तैयार किया तथा इसमें हिंदी के साथ उर्दू को भी स्वीकार किया इनके अनुसार व्याकरणिक दृष्टि से हिंदी व उर्दू में कोई अंतर नहीं है। जबकि राजा लक्ष्मण सिंह ने कहा था कि "हिंदी और उर्दू दो बोलियाँ न्यारी-न्यारी हैं।" इसका आक्षेप करते हुए शिवप्रसाद

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ने कहा यह एक भ्रम है।

इतना ही नहीं बल्कि सितारे-हिंद ने जिस भाषा का विकास किया वह 'हिन्दुस्तानी' कहलायी जिसका आगे चलकर प्रयोग भारतेंदु, प्रेमचंद व उपेंद्र अश्क ने किया।

देवनागरी लिपि में योगदान -

सितारे-हिंद की रचनाओं इतिहास-तिमिरनाशक, भूगोल हस्तामलक आदि में लिपि संबंधी प्रयोगों को देखा जा सकता है। इन्होंने क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ध्वनियों के नीचे जो नुक्ता लगाने की प्रक्रिया आरंभ की थी उसे पूरी तरह स्वीकार किया जा चुका है।

परन्तु लिपि संबंधी प्रयोगों में रखना - इस्का, रक्खा, उल्ली, उन्ने, किन्ने जैसी अशुद्धियां भी पर्याप्त मात्रा में दिखायी पड़ती है वास्तव में यह उनकी सीमा से ज्यादा उस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

युग की सीमा है आगे चलकर मानकीकरण की प्रक्रिया में इन दोषों को दूर कर लिया गया।

अतः कह सकते हैं कि शिव प्रसाद सितारे-हिंद ने हिंदी भाषा तथा नागरी लिपि का विकास आधार रूप में किया जिसका ही परिणाम था कि इसका मानकीकरण आसानी से हो सका।

प्रमुख ग्रंथों का भी उल्लेख करें।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

श्री कामताप्रसाद गुरु हिंदी व्याकरण-लेखन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने सरस्वती पत्रिका में 1908 में एक लेख लिखा था - 'हिंदी की हीनता' जिसमें इन्होंने चिंता व्यक्त की थी कि हिंदी व्याकरण-लेखन असंतोषजनक रहा था ऐसी ही चिंता महावीर प्रसाद द्विवेदी व्यक्त कर चुके थे।

फिर महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के निवेदन पर नागरी प्रचारिणी सभा ने कामताप्रसाद गुरु को हिंदी के व्याकरण लेखन का जिम्मा सौंपा इन्होंने 'हिंदी व्याकरण' तैयार किया जिसकी विशेषताएँ थी -

- शैली के रूप में नितसे के 'मराठी व्याकरण' से प्रभावित थे।
- केलॉग कृत हिंदी प्रारंभिक व्याकरण को आधार रूप में ग्रहण किया था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- इसका, उसका, इन्हें, उन्हें जैसे प्रयोगों का निषेध।
- इनके व्याकरण के तीन संस्करण
  - प्राथमिक हिंदी व्याकरण (प्राथमिक शिक्षा)
  - मध्यकालीन हिंदी व्याकरण (माध्यमिक शिक्षा)
  - उच्च हिंदी व्याकरण
- इन्होंने परसर्गों को संज्ञा से अलग करके लिखने पर जोर दिया — राम ने रावण को मारा।
- सर्वनामों के साथ जोड़कर परसर्गों को लिखने पर ध्यान दिया — मैंने अपना काम कर लिया।
- कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य संबंधी प्रयोगों में नवीनता एवं शुद्धिकरण।

इनके व्याकरण लेखन का प्रभाव बहुत व्यापक रहा जैसे - हिंदी भाषा एक विषय के रूप में विश्वविद्यालय स्तर पर स्थापित हो सकी, बंगाल से हिंदी विभागों की स्थापना, अशुद्ध प्रयोगों से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

निजात मिली तथा सबसे बढ़कर तो हिंदी भाषा का मानकीकरण को एक नयी गति मिली जिससे आगे चलकर मानकीकरण का कार्य पूर्ण हो सका।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कामताप्रसाद गुरु ने हिंदी-व्याकरण लेखन में एक निर्वात या शून्य की स्थिति को भरा जिसके कारण वास्तव में हिंदी भाषा व्याकरण लेखन का कार्य पूर्ण हो सका तथा मानकीकृत रूप सामने आया।

14/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, समूह, वर्ग आदि का नाम होता है जैसे- राम, दिल्ली, नेता आदि।

हिंदी में संज्ञाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है -

- संज्ञा
  - व्यक्तिवाचक संज्ञा
  - जातिवाचक संज्ञा
    - समूहवाचक
    - द्रव्यवाचक संज्ञा
  - ~~द्रव्यवाचक~~ भाववाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञा वह है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी या स्थान विशेष का बोध कराती है जैसे - श्याम, दिल्ली, कलकत्ता आदि।

जातिवाचक संज्ञा किसी वर्ग को इंगित करती है जैसे- मानव एक उद्यमशील प्राणी है। यहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर मानव रूपी मनुष्य जाति को व्यक्त कर रहा है।

इसके अंतर्गत ही समूहवाचक संज्ञा आती है जो व्यक्ति, प्राणी या वस्तुओं के समूह को व्यक्त करती है जैसे - 'सेना आगे बढ़ रही है' में 'सेना' समूह को व्यक्त करती है।

द्रव्यवाचक संज्ञा से किसी पदार्थ, तत्व आदि का बोध होता है जैसे - पानी, सोना, तांबा आदि।

इसके अतिरिक्त तीसरे वर्ग में भाववाचक संज्ञा आती है जो किसी भाव, विचार, सोच आदि को व्यक्त करती है जैसे - मानवता, पूर्वाग्रह आदि।

संज्ञाओं के यह वर्गीकरण पूर्णतया निरापद नहीं है अर्थात इनमें परिवर्तन भी होता है -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे - नेताजी ने कहा था कि तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा यहां पर 'नेता' शब्द व्यक्ति को संबोधित है क्योंकि यह एस. सी. बोस के नाम के साथ जुड़ गया है।

इसके अलावा यह आधुनिक भारत का जयचंद है तो यहां जयचंद व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संज्ञाओं का वर्गीकरण हिंदी की उत्कृष्ट व्यवस्था का परिणाम है तथा इससे संज्ञा पदों की पहचान में आसानी होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) बिहारी की विभिन्न बोलियों में 'मैथिली' बोली के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

बिहारी हिंदी ~~प्र~~ उपभाषा का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है इस उपभाषा के अंतर्गत मगही, भोजपुरी तथा मैथिली बोली आती हैं। तीनों ही बोलियों संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक बोलने वाले भोजपुरी के हैं। परन्तु साहित्यिक दृष्टि से मैथिली सशक्त है।

मैथिली बोली दरभंगा, सहरसा, पूर्णिया, भागलपुर, आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। इस बोली में साहित्यिक विकास की दृष्टि से '<u>विद्यापति</u>' का काव्य महत्वपूर्ण है इन्हें '<u>मैथिल कोकिल</u>' की संज्ञा दी जाती है।

विद्यापति ने <u>पदावली</u>, कीर्तिलता मैथिली में ही की है जिसमें शृंगार एवं भक्ति समन्वय का नया रूप दिखायी पड़ता है। इसमें ईश्वर के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शैरा, शम्भि एवं संगत में श्रृंगार को केंद्रीय महत्व प्रदान किया है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक समय में अमरनाथ झा जैसे विद्वान मैथिली में ही साहित्य रचना करते रहे हैं। इसके साथ ही दिनकर यद्यपि मैथिल क्षेत्र से ही थे जो कई शब्द उनके काव्य में आ ही जाते हैं।

इतना ही नहीं विभिन्न आंचलिक उपन्यासों जो कि मिथिला क्षेत्र की पृष्ठभूमि पर लिखे गये हैं इनमें शब्दावली के स्तर पर मैथिली के देशज शब्दों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है जैसे- मैला आंचल, परती परिकथा आदि।

मैथिल साहित्य की एक अन्य विशेषता इसका लोक जीवन से जुड़ाव है जो इसकी मधुरता एवं लोलता के कारण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैथिली के साहित्यिक विकास को देखते हुए ही इसको आठवीं अनुसूची में शामिल करने की बात समय-समय पर उठती रही है यद्यपि इसको साहित्यिक भाषा का दर्जा काफी पहले ही दिया जा चुका है।

इस प्रकार मैथिली साहित्य स्थानीय संस्कृति को अपनी गोद में समेटे हुए विकसित हुआ है जो इसकी अन्यतम विशेषता है।

1/

महादेव ओझा अन्य प्रमुख रचनाकारों एवं रचनाओं का उल्लेख करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की राधा

राधा भारतीय साहित्य परम्परा का एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है विद्यापति से लेकर सूर, प्रयागदास, बिहारी आदि के काव्य में राधा का रूप दिखायी देता है।

विद्यापति ने अपनी रचना पदावली में जो श्रृंगार - भक्ति का समन्वय किया है वह वस्तुत: श्रीकृष्ण - राधा की भक्ति पर ही आधारित है। इनकी राधा संयोग श्रृंगार में रसमयी कामिनी तथा वियोग में विरहदग्धता हैं। यद्यपि पदावली में संयोग पक्ष ही हावी रहा है।

कुछ आलोचकों ने राधा के इस रूप पर आक्षेप लगाये हैं तथा इनकी आध्यात्मिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

को खजुराहो की सी आध्यात्मिकता कहा है परन्तु ये आक्षेप पूर्णतया सही नहीं है।

वास्तव में विद्यापति ने राधा की भक्ति जो की थी ~~उस~~ उसी का अगला पड़ाव बिहारी, घनानंद एवं राधा वल्लभ संप्रदाय में दिखाई पड़ता है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मुक्त छन्द

मुक्त छंद छायावादी काव्य में प्रयुक्त हुआ है जिसकी प्रयोगशीलता का चरम रूप सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में दिखता है।

मुक्त छंद, छंद मुक्ति ही नहीं अपितु छंद रूढ़ि से मुक्ति की योजना है। इस छंद में तुक पर ध्यान नहीं दिया जाता तथा लय पर ध्यान दिया जाता है। इसमें भावनाओं के अनुरूप लय विद्यमान रहती है।

निराला का प्रसिद्ध कथन है 'जब ईश्वर मनुष्य छंद की रचना कर सकता है तो मुक्त छंद की रचना कर मैंने कौन सा गुनाह कर दिया।'

डा॰ रामविलास शर्मा ने भी निराला के मुक्त छंद की काफी प्रशंसा की है। वास्तव में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद तीव्र भावुकता का काल है जिसमें छंद संबंधी बंधन ठहर नहीं पाते जिसकी ही तार्किक परिणति मुक्त छंद है।

इस तरह मुक्त छंद, छायावादी काल की विशेषता रही है आगे चलकर प्रगतिवाद हो या प्रयोगवाद छंद मुक्ति की घोषणा दिखायी ही पड़ती है।

6/10

Good

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

घनानंद रीतिमुक्त काव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि हैं पर प्रेम की पीर के कवि हैं इनका काव्य सूक्ष्म संवेदनाओं से भरा पड़ा है वहीं काव्य-शिल्प भी उत्कृष्ट कोटि का है।

काव्य रूप की दृष्टि से घनानंद ने मुक्तकों की रचना की है क्योंकि तीव्र भावुकता से मुक्तक ही बनते है। ये शिल्प के प्रति सजग रचनाकार हैं –

"लोग हैं लागि कवित्त बनावत,
मोहिं तो मेरो कवित्त बनावत।"

भाषा की दृष्टि से इन्होंने 'सुजानहित', 'प्रेम विलास' आदि रचनाओं में 'ब्रजभाषा' का बड़ा ही कलात्मक उपयोग किया है घनानंद चूंकि फारसी के विद्वान थे अतः फारसी शब्द भी इनके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्य में प्रयुक्त हैं।

छंदों की दृष्टि से इन्होंने कवित्त, सवैया, दोहा का प्रयोग किया। अलंकारों की दृष्टि से स्वतः आने वाले अलंकारों को ही स्वीकार करते हैं जैसे — ऐसी रूप अगाधे, राधे, राधे राधे राधे।

उपमान की दृष्टि से कुछ अद्यात्मक किस्म के उपमानों का प्रयोग भी किया है।

इस तरह घनानंद का काव्य शिल्प प्रेम गहराईयों से प्रेरित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

यद्यपि उपन्यास अपने मूल स्वरूप में यथार्थवादी रचना रही है परन्तु पश्चिमी हो या भारत की उपन्यास परंपरा प्रारंभ में दोनों जगह आदर्शवाद, उपदेश, मनोरंजन जैसे तत्वों की ही प्रमुखता रही है।

पश्चिम में प्रारंभ में 'रोमांस' एवं 'नोवल' रचनाएं होती थी। रोमांस का संबंध अलग कल्पना प्रधान रचनाओं से था वहीं नोवल का संबंध यथार्थवादी रचनाओं से थी आगे चलकर 'नोवेल' हो गया।

हिंदी उपन्यास में प्रारंभिक चरण या प्रेमचंद पूर्व युग में काल्पनिक, तिलस्मी-ऐयारी, उपदेशात्मक उपन्यास लिखे जाते थे जिनमें आदर्शवाद के तत्व हावी रहते थी।

हिंदी उपन्यासों में प्रेमचंद का

ऐसे उपन्यासकारों की भी चर्चा करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आगमन तथा मध्यवर्ग का बढ़ता विकास ने उपन्यास परम्परा को यथार्थवाद से जोड़ा।

प्रेमचंद प्रारंभ में गाँधी के हृदय परिवर्तन जैसे सिद्धान्तों से प्रभावित थे तथा उपन्यासों में 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' की कल्पना करते रहे जैसे- निर्मला, सेवासदन, कर्मभूमि आदि परन्तु गोदान में होरी की मृत्यु यथार्थवाद का प्रत्यक्ष चरमोत्कर्ष है।

उपन्यासों में यथार्थवाद का तत्व एक अन्य रूप में दिखायी देता है जैसे- सामाजिक यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद, आधुनिक समय का मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, वास्तव में ये किसी न किसी विचारधारा को आधार मानकर चलते हैं।

इस प्रकार उपन्यासों में यथार्थवाद का एक क्रमिक रूप में विकास हुआ है साथ ही आज

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यथार्थवाद की धारणा में भी परिवर्तित हो गयी है जैसे - दलित यथार्थवाद तथा महिला यथार्थवाद। जिसमें वर्ग विशेष के यथार्थ को पूरी नग्नता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार हिंदी उपन्यासों ने यथार्थवाद की लंबी यात्रा तय की है जिसमें मध्यवर्ग के उत्थान, प्रेमचंद का योगदान एवं अन्य का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

10½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के समादृत होने के कारणों का उद्घाटन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह दिनकर की पहचान प्रायः राष्ट्रकवि के रूप में होती रही है इन्होंने उर्वशी, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र जैसी महान रचनाएं लिखी है इसके साथ ही विषय वैविध्य की दृष्टि से इनके काव्य में गरीबी, भुखमरी, किसान, युद्ध, प्रेम आदि को विषय बनाया गया है।

राष्ट्रकवि वह होता है जो देश के तड़पते लोगों पर अपनी लेखनी चलाये, उद्बोधन करें, सामाजिक जड़ताओं पर चोट करे तथा भाषा संबंध प्रयोग सहज एवं सरल हों।

इस दृष्टि से हम देखते हैं कि दिनकर ने पूरे राष्ट्र के वंचित वर्गों की समस्या को उठाया है तथा किस प्रकार किसान, गरीब व्याकुल रहते हैं—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'श्वानों को मिलता दूध भात, भूखे बच्चे अकुलाते हैं।'

इसके साथ ही दिनकर ने कुरुक्षेत्र में युद्ध की विभीषिका और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की समस्याओं को उठाया है यह वास्तव में किसी युद्ध की समस्याएं न होकर तत्कालीन भारत की ही समस्याएं थी जो विलम्ब शुल्क न्याय की ~~[illegible]~~ छटपटाहट को व्यक्त कर रही थी।

दिनकर की कुछ रचनाएं उत्तर छायावाद में भी शामिल होती रही हैं जो इनकी प्रसिद्धि का एक अन्य कारण है।

इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने काव्य में विशुद्ध सहज, सरल खड़ी बोली का प्रयोग किया उसने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इतना ही नहीं इन्होंने उर्वशी एवं रश्मिरथी में एक नये दृष्टिकोण को उभारा है।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दिनकर को राष्ट्रकवि के रूप में समादृत किया जाना चाहिए।

और बेहतर बनाएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निराला की ख्याति प्रायः 20वीं सदी के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में होती रही है जो उनकी प्रगति-चेतना का ही परिणाम है।

यह प्रगति-चेतना उनके संवेदना तथा शिल्प दोनों पक्षों में देखी जा सकती है।

संवेदना की दृष्टि से उनके काव्य में विषय वैविध्य बहुत है 'वह तोड़ती पत्थर', भिक्षुक, सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा, तुलसी आदि रचनाओं में दिखता है।

सरोज स्मृति में वह पुत्री वात्सल्य एवं भक्ति को महत्व देते हैं जबकि उस समय पुत्र वात्सल्य केंद्रित रचनाएं होती थी। राम की शक्तिपूजा तो तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से न केवल जुड़ता है अपितु 'शक्ति की मौलिक कल्पना' द्वारा एक नया रास्ता भी दिखाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुकुरमुत्ता में तो सभी आभिजात्य से मुक्ति की बात की है जब वह गुलाब को कैपटलिस्ट कहता है। निराला किसी निकायवाद में बंधने को तैयार नहीं।

इसके साथ ही गद्य लेखन में भी उनकी प्रगति चेतना उपन्यासों - तितली, इरावती तथा नाटकों में दिखती है।

शिल्प की दृष्टि से लंबी कविता, प्रगीत, गीत, मुक्त छंद, शक्ति छंद, इरान्तर प्रवाही रचना, जटिल एवं कोमल बिम्ब, भाषा का समास गुण आदि में उनके प्रगतिशील व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि निराला की प्रगति-चेतना उनके निरालेपन में ही निहित है जो समय के परिपक्व होती गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation